"नई तकनीक हमारे पर्यावरण की ऋणी है"- लोक सभा अध्यक्ष

न्यूयार्क, 01 सितम्बर, 2015 : लोक सभा अध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा महाजन, जो संसदों के अध्यक्षों के चौथे विश्व सम्मेलन में भाग लेने के लिए इस समय न्यूयार्क में हैं, ने 31 अगस्त, 2015 को "शांति और सतत् विकास की सेवा में लोकतंत्र, विश्व को लोगों की इच्छाओं के अनुरूप बनाना" विषय पर भाषण दिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नई तकनीक हमारे पर्यावरण की ऋणी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सतत् विकास का सही अर्थ एक प्राचीन भारतीय श्लोक में बताया गया हैः- सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिददुःखभाग्भवेत्। (सभी सुखी हों, स्वस्थ हों। सभी का कल्याण हो और किसी को कोई दुख न हो।

यह बताते हुए कि 2015 के बाद के विकास एजेंडा का उद्देश्य अन्य बातों के साथ-साथ देशों में और देशों के बीच असमानता को कम करना है, श्रीमती महाजन ने कहा कि प्रत्येक देश को स्थानीय परिस्थितियों के मद्देनजर सतत् विकास का लक्ष्य प्राप्त करने में विशेष चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए किसी भी सप्रभु देश को सतत् विकास लक्ष्यों संबंधी प्रगति के बारे में किसी बाहरी निगरानी तंत्र अथवा बेंचमार्क की कसौटी पर नहीं कसा जाना चाहिए। बल्कि सतत् विकास के विश्व व्यापी साझे दृष्टिकोण के लिए जरूरी है कि विकसित देश जिन पर हमारे जलवायु परिवर्तन की ऐतिहासिक जिम्मेदारी है और जिनके पास बेहतर वित्तीय और तकनीकी संसाधन हैं, को इस दिशा में एक मिसाल पेश करनी चाहिए। वसुधैव कुटुम्बकम (पूरा संसार एक परिवार जैसा है), की भावना के अनुरूप विकासशील देशों की कोशिशों में सहायता के लिए पूरे संसार की भागीदारी जरूरी है।

श्रीमती महाजन ने यह भी कहा कि भारत के विकास का लक्ष्य सबकी तरक्की सुनिश्चित करना है ताकि कोई भी व्यक्ति विकास की प्रक्रिया में छूट न जाए। इसी भावना के चलते "सबका साथ सबका विकास" मिशन में सबकी भागीदारी और सबका विकास सुनिश्चित किया जा रहा है। सबके विकास का सबसे अच्छा उदाहरण भारत में तब देखा गया जब भारत के प्रधानमंत्री के कहने पर लाखों सम्पन्न लोगों ने गरीबों की सहायता के लिए अपनी इच्छा से एलपीजी पर मिलने वाली सब्सिडी छोड़ दी।

संसदों के अध्यक्षों के साथ मिलकर काम करने की भारत की वचनबद्धता को दोहराते हुए श्रीमती महाजन ने विश्व के लोगों को अपनी जरूरतों और इच्छाओं के बीच संतुलन बनाकर चलने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि गरीबी अथवा भुखमरी रहित विश्व सुरक्षित, बेहतर और सुंदर होता है।